साहित्यकार संसद भवन, रसूलाबाद,
इलाहाबाद
२२.९.४८.

प्रिय शास्त्रीजी और बलदेवजी,

आपलोगों का एक कृपापत्र [illegible]
नहीं लिख सका। घायल हो गया था [illegible]
रायबरेली के सरकारी अस्पताल में था, पन्द्रह[illegible]
वहाँ से प्रयाग आया चौदहवें दिन। अभी तक
पूरी तरह स्वस्थ नहीं हुआ, दो महीने
हो गये। इस समय आत्मानुष्ठान में हूँ। कुछ
गीत संग्रह — [illegible] आदि निकले हैं, देखे
होंगे। एक जानकीवल्लभ को, एक 'रागिनी' [illegible]
भेज दिया है: एक नया पुस्तक लोगों को [illegible]
[illegible] की ओर से मिलने भेजता हूँ।
पत्र के लायक है। कुछ दिन बाद मिलने की
इच्छा है। व्यवसाय का रूप एक बार
यह बलवती आकांक्षा है। विद्यालय का
संचालन का प्रचार होगा। उत्तर देना। विद्यार्थियों
बच्चों का स्नेह, बड़ों को मेरा [illegible]
नमस्कार। इति

आपलोगों का
निराला